नई टीम-और उसके आगे (15:40-16:10)

नये क्षेत्र में सुसमाचार का प्रचार करने जाने वाले के लिए किसी टीम का भाग होना महत्वपूर्ण है। जब यीशु ने कार्यकर्ताओं को भेजा, तो उसने उन्हें दो-दो करके भेजा (मरकुस 6:7)। नियम के अनुसार, पौलुस ने अपने आप काम करने का यत्न नहीं किया।[1] मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जो कठिन क्षेत्रों में भी अकेले काम करने के लिए अपने परिवारों को साथ ले गए। मैंने उनके उत्साह और समर्पण की प्रशंसा की, परन्तु आम तौर पर उसके परिणाम दु:खद ही रहे। काम करने वाले लोग निरुत्साहित हुए और छोड़ गए, वैवाहिक सम्बन्ध कमज़ोर हुए, और टूट गए, और बच्चे प्रभु के लिए गंवा दिए।

जब पौलुस ने बरनबास और यूहन्ना मरकुस के साथ प्रथम यात्रा आरम्भ की, तो उसने सम्भवत: यही सोचा था कि वह एक टीम का भाग है जो अनिश्चित समय तक मिलकर काम करेगी। परन्तु, थोड़ी देर के बाद मरकुस छोड़ कर चला गया (13:13)। फिर पौलुस के दूसरी यात्रा के इरादे के बाद, उसमें और बरनबास में "झगड़ा हुआ" और वे अलग-अलग दिशा में चले गए (15:39)। पौलुस को वह टीम फिर से बनानी थी। यदि खेलों में आपकी थोड़ी सी दिलचस्पी है,[2] तो आप जानते होंगे कि कुछ वर्षों के बाद टीम को फिर से बनाना कितना आवश्यक होता है: हाई स्कूल और कॉलेज में, खिलाड़ी शिक्षा पाते हैं; पेशेवर खिलाड़ी दूसरी टीमों में जाते हैं या रिटायर हो जाते हैं। आप यह भी जानते हैं कि छोड़कर जाने वालों की जगह योग्य खिलाड़ियों को ढूंढकर नियुक्त करना कितना कठिन है। फिर से टीम बनाने का पौलुस का प्रयास खिलाड़ियों की टीम को फिर से बनाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था; उसे सही व्यक्तियों को ढूंढना था, नहीं तो प्रभु के कार्य की हानि हो जाती! पौलुस के सामने एक अति महत्वपूर्ण कार्य था।

इस पाठ में, हम पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा अर्थात उस यात्रा का अपना अध्ययन आरम्भ करेंगे। जो उसे उन दूर-दराज के इलाकों तक ले गई जिनके बारे में उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वह सुसमाचार को सुनाने के लिए वहां तक जाएगा। इस यात्रा के आरम्भिक पड़ावों में हम देखेंगे कि पौलुस ने सहकर्मियों की एक नई टीम अपने आस-पास इकट्ठी कर ली जिनमें से अधिकतर ने उसके शेष जीवन में उसके साथ रहना था।[3] टीम से भी बढ़कर उसके निकटतम मित्र बन गए।

किसी पर भरोसा किया जाए (15:40, 41)

जब पौलुस और बरनबास अलग हुए, तो पौलुस ने दूसरी यात्रा में अपने साथ ले जाने के लिए सीलास को चुना। हम सीलास से पिछले एक पाठ में मिले थे; वह एक नबी था (15:32) और यरूशलेम की कलीसिया में "प्रमुख लोगों" में से एक (शायद उस मण्डली का एक प्राचीन[4]) था (15:22)। वह यरूशलेम की कलीसिया का पत्र देने के लिए पौलुस, बरनबास, और अन्यों के साथ अन्ताकिया में आया था। अन्ताकिया में रहते हुए, उसने प्रचार किया और शिक्षा दी, भाइयों को उत्साहित और दृढ़ किया (15:32)। स्पष्टतया, पौलुस उसकी योग्यता से प्रभावित हुआ था और उसने उसमें सदृश आत्मा के दर्शन किए थे। जब पौलुस ने विचार किया कि बरनबास की जगह किसको लिया जाए, तो उसके मन में सीलास की तस्वीर ही बनी।[5]

प्रथम यात्रा के दौरान स्थापित हुई कलीसियाओं में फिर से जाने के पौलुस के उद्देश्य के लिए सीलास पूर्णतया सही था।[6] पौलुस की तरह, वह आत्मा की प्रेरणा से बोल सकता था, सो वह कार्य के बोझ को बांट सकता था। पौलुस की तरह, वह एक रोमी नागरिक था (16:37), सो उसे भी वही राजनैतिक अधिकार प्राप्त थे जो पौलुस को मिले थे। उसमें यात्रा के लिए योग्य होने की विलक्षण योग्यता थी: वह मण्डलियों में यरूशलेम से लाई गई चिट्ठी की सत्यता की पुष्टि कर सकता था (16:4) जैसे उसने अन्ताकिया में की थी (15:22, 27)।

सीलास को टीम में मिलाकर, पौलुस ने एक ऐसे व्यक्ति के साथ यात्रा आरम्भ की जो उसके बोझ को हल्का कर सकता था: "परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहां से चला गया" (आयत 40)। एक बार फिर, किसी न किसी (औपचारिक या अनौपचारिक) रूप में, अन्ताकिया के भाइयों ने मण्डली और प्रभु की आशिषों के साथ पौलुस को रवाना कर दिया। बरनबास ने मरकुस को साथ लिया था और वह जहाज़ से कुप्रुस की ओर चल दिया था (आयत 39), सो पौलुस ने जहाज़ से यात्रा आरम्भ नहीं की, जैसे कि उसने प्रथम यात्रा की थी। बल्कि, वह और सीलास उत्तर और फिर पश्चिम की ओर, उन मण्डलियों से मिलते हुए, जिन्हें पौलुस ने सम्भवत: तरसुस में अपने दस या अधिक वर्षों के प्रवास के दौरान स्थापित किया था, निकल पड़े[7]: "और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते हुए निकला" (आयत 41)।[8] यरूशलेम की कलीसिया से आया पत्र उन कलीसियाओं के नाम था (आयत 23); यदि यह पत्री उन्हें पहले नहीं भेजी गई थी, तो बेशक पौलुस और सीलास ने इस बार उन्हें दे दी।[9]

किसी को सिखाया जाए (16:1-5)

सूरिया और किलिकिया में उनका कार्य पूरा हो गया था, पौलुस और सीलास पश्चिम की ओर निकल पड़े। किलिकिया के निचले मैदानी इलाकों को छोड़ते हुए, वे दर्रे से जिसे किलिकियन दर्रा[10] के नाम से जाना जाता था, होते हुए कठिन तौरस पर्वत को पार करके, अन्त में दक्षिणी गलतिया के पठार में पहुंचे, जहां पौलुस ने प्रथम यात्रा के समय काम

किया था: ''फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया'' (16:1क)। क्योंकि पौलुस पश्चिम के बजाय पूर्व से आया, इसलिए दिरबे का नाम लुस्त्रा से पहले लिखा गया। (पौलुस ने दिरबे में काम किया था, इसलिए मुझे आश्चर्य है कि किसी ने बरनबास के बारे में उससे पूछा हो और, यदि उन्होंने पूछा हो, तो उसने क्या उत्तर दिया।)

जब पौलुस लुस्त्रा में पहुंचा,[11] तो ''देखो, वहां तीमुथियुस नामक एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था'' (आयत 1ख)। यहां हमारा परिचय उस व्यक्ति से करवाया जाता है जो ''[पौलुस का] अतिप्रिय मित्र'' और ''विश्वास में उसका पुत्र जिसे उसने शरीर में कभी जन्म नहीं दिया,'' बन गया।

2 तीमुथियुस 1:5 से हमें पता चलता है कि तीमुथियुस की माता, ''यहूदी महिला जो एक विश्वासिनी थी'' का नाम यूनीके था, और उसकी माता भी एक भक्त स्त्री थी जिसका नाम लोइस था। उसके बचपन से ही, इन दो भक्त स्त्रियों ने तीमुथियुस को वचन की अच्छी शिक्षा दी थी (2 तीमुथियुस 3:15), जिससे उसमें परमेश्वर और उसके वचन के प्रति गहरा विश्वास हो गया था (2 तीमुथियुस 1:5)। जब पौलुस पहली बार लुस्त्रा में आया, तो न केवल यूनीके और लोइस ही मसीही बनी,[12] बल्कि जवान तीमुथियुस जो अभी टीन-एजर[13] ही था, ने भी बपतिस्मा लिया था।[14]

उस बच्चे को कितनी आशीष है जिसके माता-पिता और आगे उनके माता-पिता अपनी आत्मिक भलाई के बारे में सबसे अधिक दिलचस्पी लेते हैं! यदि आप छोटे बच्चों के माता-पिता हैं, तो बच्चों के पालन-पोषण और परमेश्वर के मार्ग के अनुसार उनकी शिक्षा के लिए अपनी सेवा के उस सबसे बड़े दायित्व को समझें![15] मैं नहीं जानता कि यूनीके ने परमेश्वर की सेवा में और क्या किया, परन्तु उसने एक ऐसे लड़के का पालन-पोषण करने से बड़ा और कोई काम नहीं किया, जो प्रभु के काम आ सके!

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यूनीके और लोइस ने स्वयं दूसरों से सहायता मिलने या न मिलने पर भी ''[तीमुथियुस को] उसी मार्ग की शिक्षा देनी थी जिसमें उसने चलना था'' (तु. नीतिवचन 22:6)। लुस्त्रा में कोई आराधनालय नहीं था, न ही तीमुथियुस को सिखाने के लिए कोई वहां रब्बी था।[16] फिर, यूनीके की शादी एक गैर यहूदी व्यक्ति[17] के साथ हुई थी जो उसके विश्वास से सहमत नहीं था और संभवत: वह उसके धर्म की प्रथा का विरोध करता था।[18] यदि आपके बच्चे छोटे हैं और आप अपने आप को यूनीके के स्थान पर पाएं,[19] तो देखें कि तीमुथियुस कैसे निकला और दिल रखें।

समय-समय पर, मैं उन जगहों पर जाता हूं जहां मैं काम कर चुका होता हूं। निरपवाद रूप में, मुझे उदासी और आनन्द दोनों का अनुभव है: मैं विश्वास से गिरने वाले लोगों के बारे में जानकर दुखी होता हूं, परन्तु जो आत्मिक उन्नति कर रहे हैं उनके बारे में जानकर आनन्दित होता हूं। जवान तीमुथियुस की उन्नति को देखकर पौलुस अवश्य ही आनन्दित हुआ होगा। टीन एज की समाप्ति या बीस की आयु तक पहुंचने से पहले ही,[20] ''वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था'' (16:2)। इकुनियुम लुस्त्रा से कुछ ही दूरी पर था, [21] तीमुथियुस प्रभु की सेवा में काफ़ी दूर तक सक्रिय था। शायद उसकी

पहचान एक प्रचारक के रूप में ही थी।[22] किसी समय, शायद पौलुस के पहुंचने से भी पहले लुस्त्रा की मण्डली के प्राचीनों ने उस पर हाथ रखकर, उसे सुसमाचारक के काम के लिए ठहराया था (1 तीमुथियुस 4:14), [23] मुझे यकीन है कि सभी जवान प्रचारकों की तरह तीमुथियुस अभी भी खीझ कर बोलता था। इसके अलावा, वह शर्मीला[24] और कई प्रकार की शारीरिक अस्वस्थताओं से पीड़ित था (1 तीमुथियुस 5:23)। फिर भी, पौलुस ने उसमें अद्भुत सम्भावना देखी और उसे अपनी टीम का सदस्य बनाना चाहा। पौलुस ने तीमुथियुस के साथ वही करना चाहा जो बरनबास ने मरकुस के साथ करना चाहा था अर्थात वह उसे राज्य की महान सेवा के लिए शिक्षित करना चाहता था। शायद पौलुस ने तीमुथियुस को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जो एक दिन उसका स्थान ले सकता था (2 तीमुथियुस 2:2)।

प्रेरितों 16:3 कहता है, ''पौलुस ने चाहा, कि यह मेरे साथ चले।'' तीमुथियुस अभी जवान ही था, और उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी, [25] सो यूनीके को यह निर्णय करना था कि वह उसे यात्रा में पौलुस के साथ भेजे या नहीं। यह तथ्य कि यूनीके ने उसे जाने की अनुमति दे दी मेरे मन में उसके प्रति सम्मान भर देता है। एक पल के लिए, आप अपने आपको उस मां की जगह रखिए: आपको अभी भी पौलुस के जीवन को रौंदती हुई भीड़ के गुर्राने की आवाज़ें सुनाई दे सकती हैं। आप अपनी आंखें बन्द करके अभी भी उसकी लहू से लथपथ और कुचली हुई देह को देख सकते हैं। अब यह व्यक्ति, जिसे अक्सर एक शिकार हुए जानवर की तरह रहना पड़ता है, आपके पास आकर कहता है, ''मैं चाहता हूं कि आपका बेटा मेरे साथ आए और मेरे जैसा बने।'' आप क्या कहेंगे? मैं जानता हूं कि बहुत सी माताओं ने क्या कहा होगा। मेरे सीमित से अनुभव में, पुरुषों और स्त्रियों द्वारा प्रभु के कार्य में जाने से मन बदलने का पहला कारण वह रोती हुई माताएं हैं जो पुकार रही थीं, ''मुझे छोड़कर मत जाओ! अगर तुम दूर चले जाओगे तो मेरी देखभाल कौन करेगा!'' या ''मुझ से मेरे पोते/पोती या नाती को मत छीनो!''[26] यदि कोई मारकूट खाया हुआ मिशनरी आकर इन माताओं से कहे, ''मैं आपके बच्चे को ले जाना चाहता हूं ताकि यह मेरे साथ दुख उठाए''? तो क्या हो? परमेश्वर उन माता-पिता को आशीष दे जो अपने बच्चों को प्रभु के कार्य के लिए जाने देते हैं, जो यूनीके के साथ कहते हैं, ''मुझे तुम्हें यहां अपने साथ रखना अच्छा लगेगा, लेकिन मेरी व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर का कार्य है। माता-पिता हूं, इसलिए मुझे तुम्हारी चिन्ता करनी चाहिए परन्तु मुझे विश्वास है कि परमेश्वर तुम्हारी सम्भाल करेगा। जा, मेरी प्रार्थनाएं तेरे साथ हैं।''

तीमुथियुस उस टीम में शामिल हो गया; वे दो से तीन हो गए। पौलुस ने फिर कुछ चौंकाने वाला, बल्कि चकित करने वाला काम किया: ''और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे [तीमुथियुस को] लेकर उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था''[27] (आयत 3ख)। क्या यह वही पौलुस है जो यहूदी शिक्षा देने वाले उन लोगों के साथ लड़ा था जो कहते थे कि मसीही बनने के लिए खतना करवाना आवश्यक है (15:2)? क्या यह वही पौलुस है जिसने यरूशलेम की सभा में जाते हुए तीतुस का खतना करने की अनुमति देने से इन्कार किया था (गलतियों 2:3)?

क्या यह वही पौलुस है जिसने गलतिया की कलीसियाओं को लिखा था, ''कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा'' (गलतियों 5:2) ? क्या यह वही पौलुस है जो कलीसियाओं को सूचित करने के लिए यरूशलेम से कि खतना मसीहियों पर बाध्य नहीं था, पत्र लेकर जा रहा था (16:4) ?

समझना चाहिए कि पौलुस ने तीतुस के खतने की अनुमति क्यों नहीं दी और उसे क्यों लगा कि तीमुथियुस का खतना होना आवश्यक है। दोनों घटनाओं में भिन्नताओं पर विचार कीजिए। आइए तीतुस से आरम्भ करते हैं: तीतुस एक गैर यहूदी था (गलतियों 2:3), और यहूदी शिक्षा देने वाले यह ज़ोर दे रहे थे कि उद्धार पाने के लिए उसका खतना होना आवश्यक है (प्रेरितों 15:1)। यदि पौलुस तीतुस के खतने की अनुमति दे देता, तो झूठी शिक्षा देने वालों के लिए यह कहना आसान हो जाता कि वे सही हैं और पौलुस उसकी मंजूरी नहीं दे सकता था। पौलुस ने तीतुस के खतने की अनुमति *सिद्धांत को ध्यान में* रखकर नहीं दी।

दूसरी ओर, तीमुथियुस की पृष्ठभूमि एक यहूदी की थी (16:1), और प्रश्न उसके उद्धार का नहीं था। शास्त्र हमें बताता है कि पौलुस ने उसका खतना क्यों किया: ''जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण... क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था'' (16:3)। तीमुथियुस की मां यहूदी थी, इसलिए यहूदी लोग तीमुथियुस को एक यहूदी ही मानते थे[28] क्योंकि उसका खतना नहीं हुआ था, इसलिए तकनीकी रूप में वह एक धर्मत्याग करने वाला यहूदी था। जैसे कि हमने देखा है, किसी नये शहर में प्रवेश करने पर यदि उस नगर में आराधनालय मिलता, तो पौलुस अपना काम वहीं से आरम्भ करता था। परन्तु, यदि तीमुथियुस का खतना नहीं होता, तो उसे आराधनालय में जाने की अनुमति नहीं मिलनी थी। फिर, यदि यहूदियों को लगता कि पौलुस ने तीमुथियुस के धर्मत्याग को प्रोत्साहन दिया है, तो उसे भी आराधनालय में जाने की अनुमति न मिलती। पौलुस ने तीमुथियुस का खतना *कार्यसाधना* के लिए किया।[29] ''तीमुथियुस का खतना व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए एक छोटा सा ऑपरेशन था ताकि सुसमाचार की सेवकाई के लिए वह अधिक लाभदायक हो सके।''

प्रेरितों 16:3, 1 कुरिन्थियों 9 में पौलुस की बात का व्यावहारिक प्रदर्शन है:

> क्योंकि सब से स्वतन्त्र होने पर भी मैंने अपने आप को सब का दास बना दिया है: कि अधिक से अधिक लोगों को खींच लाऊं। मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं, ... मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं (1 कुरिन्थियों 9:19-22)।

प्रेरितों के काम 16 और 1 कुरिन्थियों 9 में एक व्यापक सिद्धांत मिलता है: लोगों में सुसमाचार प्रचार के साथ शिक्षा देने का यत्न करते समय, हमारे लिए *सच्चाई के साथ बिना समझौता किए* वह सब कुछ करना आवश्यक है जिससे वे ठोकर से बचे रहें। तीतुस

के खतने से सच्चाई के साथ समझौता हुआ होगा। तीमुथियुस के खतने से सच्चाई के साथ समझौता तो नहीं हुआ, परन्तु इससे एक दाग अवश्य मिट गया।

आधुनिक उदाहरणों को बहुत बढ़ाया जा सकता था। ऑस्ट्रेलिया में काम करते समय, हमें पता चला कि अमेरिका में इस्तेमाल किए जाने वाले बहुत से शब्दों को ऑस्ट्रेलियाई अशिष्ट नहीं, तो कम से कम अशोधित तो मानते ही थे। हम उन्हें ठोकर न देने के विचार से उन शब्दों का इस्तेमाल करने से परहेज करते थे। संसार के बहुत से देशों में, घर में प्रवेश करने से पहले जूते उतार दिए जाते हैं। ऐसा न करने से मेजबान बेइज्जती महसूस करता है। कई देशों में बायें हाथ से कोई वस्तु देना आपत्तिजनक माना जाता है। यदि उन देशों में प्रभु के सेवक अपने आस-पास के लोगों में पहुंचना चाहते हैं, तो वे बायें हाथ के इस्तेमाल से परहेज करना सीखते हैं। इनमें से कोई भी बात सच्चाई के साथ समझौता नहीं है। हमें केवल अपने और उन लोगों के बीच जिनमें हम सुसमाचार को लेकर जाते हैं, अनावश्यक दीवारों को खड़ा नहीं होने देना चाहिए।

परन्तु, यह निर्णय करना कि स्थानीय परम्परा का पालन करने में सच्चाई के साथ समझौता आता है या नहीं, हमेशा आसान नहीं होता। वारेन वियर्सबे ने द *बाइबल एक्सपोज़िशन कमेंट्री* में लिखा है, ''बुद्धिमान आत्मिक अगुआ जानता है... कि कब किसी बात पर अड़े रहना है और कब सहमत होना है।'' जब इस विषय में कठिन निर्णय का सामना हो तो आपको बुद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब 1:5), और आपको विश्वास में अपने से बड़े तथा बुद्धिमान व्यक्ति से बात करनी चाहिए (नीतिवचन 11:14)।

तीमुथियुस के खतने की बात से आगे बढ़ने से पहले, हमें उस जवान द्वारा स्वयं इस बात को मानने पर ध्यान देना चाहिए। खतना ''एक छोटा सा ऑपरेशन'' होगा, परन्तु यह पीड़ादायक था। कहने की आवश्यकता नहीं कि इससे बहुत घबराहट होती होगी। यदि तीमुथियुस आज के कुछ जवानों जैसा होता, तो उसने कहा होता, ''कोई मुझ से जबरदस्ती ऐसा नहीं *करवा* सकता!'' या ''मुझे वह हवाला दिखाओ जहां लिखा है कि मेरा खतना होना ही चाहिए!'' तीमुथियुस को पीड़ा और शर्मिंदगी के लिए मजबूर नहीं किया गया था; यह उसने अपनी इच्छा से किया था।[30] उसने अपना खतना करने की अनुमति क्यों दी? प्रभु के काम की भलाई और अच्छा प्रभाव देने के लिए। अपने परिवारों और कलीसिया को अपने पहरावे और आचरण से शर्मिंदा करने वाले को जवान तीमुथियुस से शिक्षा मिल सकती थी।

तीमुथियुस के खतने के बाद, पौलुस प्रभु के काम को अपनी अनुपस्थिति में भी चलता रहने के लिए एक जवान को सिखाने के अतिरिक्त लाभ के साथ फिर से अपनी यात्रा पर चल पड़ा। प्रभु की सेवा के लिए जवान पुरुषों को शिक्षा देने से अधिक महत्वपूर्ण कामों के बारे में मैं जानता हूं[31] और एक-एक को सिखाने से काम करते हुए सीखने के ढंग को अधिक प्रभावी जानता हूं।[32] जहां आप आराधना करते हैं वहां चारों ओर देखिए। क्या वहां कोई ऐसा जवान है जिसको प्रभु की सेवा के लिए आप उत्साहित कर सकते हों? क्या कोई ऐसा है जिसको आप सिखा सकते हो, जिसको आप अपने साथ लेकर प्रभु की सेवा कर सकते हो? स्वर्गीय राजा के लिए यदि आप कुछ करना चाहते हैं तो यह काम अति महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब इस टीम के आगे बढ़ने का समय था शायद इसी समय लुस्त्रा की कलीसिया के प्राचीनों ने तीमुथियुस पर हाथ रखे (1 तीमुथियुस 4:14)। इसमें कोई शक नहीं कि किसी समय, पौलुस ने भी (2 तीमुथियुस 1:6), उसे अद्‌भुत कार्य करने की योग्यताएं देने के लिए उस पर हाथ रखे हों।[33] शायद प्राचीनों और पौलुस ने आगे आने वाले काम को करने के लिए और उस काम की तैयारी के लिए तीमुथियुस को अलग करने के लिए इकट्ठे होकर सभा की।[34] मैं अपने मन में विदाई का दृश्य बना सकता हूं जिसमें जवान तीमुथियुस आंसुओं को रोकते हुए, अपने आप को अपनी मां से अलग कर, लुस्त्रा में भाइयों की ओर बढ़ा, फिर अनिश्चित भविष्य के लिए पौलुस और सीलास के पीछे एक धूल भरे मार्ग पर चल पड़ा।

ये लोग उत्तर की प्रथम यात्रा में इकुनियुम, पिसिदिया के अन्ताकिया, शायद कहीं और भी स्थापित हुई कलीसियाओं को देखते हुए, और दक्षिण की ओर गए।[35] ''और नगर-नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिए उन्हें पहुंचाते जाते थे''[36] (16:4)। इस आयत में ''वे'' शब्द पर ध्यान दें। 15:40 से 16:3 में, एकवचन ''वह'' का उपयोग हुआ था जो पौलुस के काम पर ज़ोर देता था। परन्तु, 16:4 ज़ोर देता है कि ''वे'' उन विधियों को बता रहे थे: सीलास ने यह पुष्टि करने का अपना विलक्षण उद्देश्य पूरा किया कि वे विधियां वास्तव में यरूशलेम में प्रेरितों ने ही ठहराई हैं।

वे उस क्षेत्र से गुजर रहे थे जहां कभी पौलुस के पीछे लोग पड़े थे और जहां के नागरिकों ने उसकी हत्या करने का यत्न किया था। परन्तु, इस बार, इन मिशनरियों की सेवा शांतिपूर्ण लगती है और परमेश्वर ने उनके मिशन को आशीष दी। ''इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में[37] स्थिर होती गईं और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गईं'' (16:5)।[38]

कोई मुड़े (16:6-11)

फ्रूगिया और गलतिया में काम की सफलता से पौलुस इतना उत्साहित था कि वह सुसमाचार का बीज बोने के लिए नये खेत ढूंढने लगा। पश्चिम की ओर एशिया था,[39] जो रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में प्रमुख और बहुत समृद्ध इलाका था। पौलुस और उसके साथी एशिया के केन्द्र, इफुसुस नगर की ओर चल दिए।[40] उनके लिए आश्चर्य की बात यह थी, कि परमेश्वर ने उनका मार्ग रोका और उन्हें अपना रास्ता बदलना पड़ा। ''और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया'' (आयत 6)। हम नहीं जानते कि पवित्र आत्मा ने अपना संदेश उन तक कैसे पहुंचाया (शायद भविष्यवाणी के द्वारा[41]), परन्तु परमेश्वर ने उनके मनों में कोई शक नहीं रहने दिया: इस बार उन्हें एशिया में नहीं जाना था।[42]

जब वे मूसिया के इलाके में पहुंचे, तो उन्होंने उत्तर की ओर रोम के धनी इलाके बितूनिया में जाने का निर्णय लिया।[43] ''और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया'' (आयत 7)। आयत 6 में

उल्लेखित "पवित्र आत्मा" "यीशु का आत्मा" ही है। इस विलक्षण वाक्यांश[44] का प्रयोग यहां शायद यह ज़ोर देने के लिए किया गया है कि यीशु स्वयं व्यक्तिगत और व्यापक तौर पर अपने ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा को पूरा करने में लगा हुआ था!

वे दक्षिण की ओर एशिया में नहीं जा सके; और वे उत्तर की ओर बितूनिया में नहीं जा सके। हार मानकर पीछे मुड़ने तक वे केवल पश्चिम की ओर ही जा पाए थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि घबराए हुए और परेशान, वे अन्त में त्रोआस में पहुंच गए (आयत 8), जो कि प्राचीन त्रोए के खण्डहरों से कुछ मील पर एक रोमी कॉलोनी और व्यस्त बंदरगाह थी। मैं कल्पना करता हूं कि बिस्तर पर लेटे हुए उनके दिमाग में बहुत से प्रश्न घूम रहे थे, परन्तु रात को परमेश्वर ने उन्हें उनका उत्तर दे दिया:

> और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर। उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है (आयतें 9, 10)।

अगले पाठ में हम उस प्रसिद्ध "मकिदुनी बुलाहट (Macedonian Call)" पर अपना अध्ययन आरम्भ करेंगे और देखेंगे कि सुसमाचार के लिए एक बिल्कुल नये महाद्वीप का मार्ग खुला है। परन्तु, अभी के लिए, मैं आयत 10 में दो बातों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूं: "हम ने ... मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने *हमें* उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।" डॉक्टर लूका ने जो प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक है, कहानी में अपना स्वयं का परिचय देने के लिए दो व्यक्तिगत सर्वनामों का इस्तेमाल किया। पौलुस को अपनी टीम का चौथा सदस्य त्रोआस में मिला।

पौलुस को लूका कैसे मिला? इसकी अति स्वाभाविक व्याख्या यह है कि पौलुस और तीमुथियुस किसी डॉक्टर को ढूंढने के लिए गए (उन्हें कोई तकलीफ़ होगी) और उन्हें लूका मिल गया।[45] परन्तु यह परमेश्वर की समयोचित चिन्ता अर्थात पूर्वप्रबन्ध के कारण हुआ,[46] पौलुस को एक और आदमी मिल गया जो न केवल उसकी टीम का एक मूल्यवान सदस्य था, बल्कि उसका व्यक्तिगत मित्र भी होगा।

हम लूका के बारे में बहुत कुछ कह सकते हैं। जैसे इस श्रृंखला के परिचय में ध्यान दिलाया गया कि वह एक अन्यजाति सम्भवत: यूनानी था (कुलुस्सियों 4:10, 11, 14), परम्परा के अनुसार अन्ताकिया से और यीशु के जीवन का चश्मदीद गवाह नहीं था (लूका 1:2)। वह एक शिक्षित और समझदार व्यक्ति था, जिसने डॉक्टरी की शिक्षा पाई थी (कुलुस्सियों 4:14); और पौलुस द्वारा उस पर हाथ रखने के बाद, उसे परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा मिली थी। पौलुस के सहयात्री के रूप में, उसने अपने आप को एक बहादुर साथी, कलीसिया बनाने के लिए समर्पित, और एक विश्वासी मित्र प्रमाणित किया (फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)।

अभी मैं लूका की केवल दो ही भूमिकाओं पर ध्यान दिलाना चाहता हूं: वह पौलुस का निजी डॉक्टर और विश्वासी मित्र बना रहा। 2 कुरिन्थियों में, पौलुस ने अपने मानसिक संताप (''सब कलीसियाओं की'' चिन्ता [2 कुरिन्थियों 11:28]) और अपने शारीरिक संताप (अपने ''शरीर में कांटा'' [12:7-9]) होने की बात की। मेरे ख्याल से लूका ''वह आदमी है जिसने पौलुस को चलाए रखा।'' क्या आपके जीवन में कोई ऐसा है जो आपको चलाए रखता है ? मुझे आशा है कि आपके जीवन में भी कोई ऐसा व्यक्ति होगा। और महत्वपूर्ण, *क्या* आप वह कोई हैं जो दूसरे लोगों को चलाए रखते हैं ? लूका की तरह, आप भी देख सकते हैं कि आपकी महानतम सेवा के कारण दूसरे लोग दृढ़ और उत्साहित होते हैं। पौलुस और उसके साथी त्रोआस से जहाज़ पर चढ़ने तक तीन से चार हो चुके थे। पौलुस की ''ड्रीम टीम''[47] पूरी हो चली थी।

सारांश

एक नबी, एक प्रचारक, और एक डॉक्टर: ये लोग अलग-अलग समूह से थे। परन्तु वे सभी एक ही उद्देश्य के प्रति समर्पित थे। अगले पाठों में हम उनके साहसिक कार्यों का अनुभव करेंगे जो उन्होंने उस महाद्वीप में किए जिसे अब यूरोप कहा जाता है।

मेरी प्रार्थना है कि आपके पास भी कोई हो जिस पर आप भरोसा कर सकते हों, जिसे आप सिखा सकते हों, जिसकी ओर आप मुड़ सकते हों। हम में से बहुतों ने इन में से पहले और अन्तिम को मसीही साथी में और दूसरे को अपने बच्चों में पाया है। आपके साथ ऐसा है या नहीं, मैं आपको उत्साहित करूंगा कि आप ऐसे लोगों के साथ टीम बनाएं जो आपकी भावनाओं और दिलचस्पी में आपके साथ भागीदार हों।

> एक से दो अच्छे हैं, ... क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो। यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका साम्हना कर सकेंगे। जो डोरी तीन धागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती (सभोपदेशक 4:9-12)।

प्रवचन नोट्स

इस सामग्री को साधारण रूप से मित्रता पर पाठ के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। आपको सीलास, तीमुथियुस, और लूका की जीवनियों के अध्ययन में आनन्द मिल सकता है। सीलास पर अतिरिक्त जानकारी पादटिप्पणियों में मिल जाएगी, जबकि तीमुथियुस पर जानकारी प्रेरितों के काम के हमारे शेष अध्ययन में मिलती रहेगी। आपको ये हवाले भी देख लेने चाहिए: रोमियों 16:21; 1 कुरिन्थियों 4:17; 16:10, 11; 2 कुरिन्थियों 1:1, 19; फिलिप्पियों 1:1; 2:19-23; कुलुस्सियों 1:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 3:2, 5, 6; फिलेमोन 1; इब्रानियों 13:23; और 1 और 2 तीमुथियुस सारे का सारा (विशेष तौर पर

1 तीमुथियुस 1:18; 4:12; 2 तीमुथियुस 1:2-4, 6; 4:9, 13)। लूका के बारे में जानने के लिए अच्छा स्रोत ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' का परिचय है। यदि आपने लूका के बारे में उस सारी सामग्री का उपयोग नहीं किया, तो उसका उपयोग करने का यह अच्छा समय होगा।

पाद टिप्पणियां

[1]अथेने एक अपवाद था, परन्तु वह परिस्थितियों के कारणवश था और उसके परिणाम सन्तोषजनक नहीं थे। [2]पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए (1 कुरिन्थियों 9:24-27), मैं एथलेटिक के साथ तुलना करता हूं। इसको स्थानीय तौर पर खेले गए खेलों के साथ मिलाएं। [3]तीमुथियुस और लूका पौलुस की मौत तक उसके साथ काम करते रहे। [4]इस भाग में 15:22 पर नोट्स देखिए। [5]सीलास यरूशलेम को चला गया (पृष्ठ 140 पर 15:33,34 पर नोट्स देखिए)। बाद में वह अन्ताकिया में गया या पौलुस ने उसे यरूशलेम में बुलाया, यह हम नहीं जानते। [6]सीलास ने दूसरी यात्रा में पौलुस के साथ-साथ काम किया (और कष्ट झेला) (16:19, 25, 29; 17:4, 10, 14, 15; 18:5)। दूसरा कुरिन्थियों 1:19 कुरिन्थुस में उसके काम का हवाला देता है (''सिलवानुस'' उसके नाम का एक और रूप है)। पौलुस ने कुरिन्थुस से थिस्सलुनीके की कलीसिया के नाम दो पत्र सीलास से लिखवाए होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। हमें नहीं मालूम कि दूसरी यात्रा के बाद पौलुस के साथ सीलास का क्या सम्बन्ध था। हम इतना जानते हैं कि सीलास बाद में पतरस का सहकर्मी था और पतरस ने अपनी पहली पत्री उससे लिखवाई (1 पतरस 5:12)। [7]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में पृष्ठ 134 पर 9:30 पर नोट्स देखिए। गलतियों 1:21 भी देखिए। [8]पृष्ठ 151 पर पौलुस की यात्राओं का मानचित्र देखिए। [9]किलिकिया में रहते हुए क्या पौलुस तरसुस में गया? क्या उसके परिवार ने उसका स्वागत किया होगा? [10]यद्यपि लूका ने यह विवरण नहीं दिया, परन्तु किलिकिया से गलतिया को जाने के लिए केवल यही व्यावहारिक मार्ग था।

[11]यदि केवल आयत 1 पर ही विचार किया जाए, तो यह माना जा सकता है कि तीमुथियुस दिरबे या लुस्त्रा दोनों में से एक जगह से था (यद्यपि ''वहां'' का पूर्वपद लुस्त्रा ही है)। परन्तु, यदि आयत 2 को भी ध्यान में रखा जाए, तो यह निश्चित हो सकता है कि तीमुथियुस लुस्त्रा से था, क्योंकि आयत 2 में केवल लुस्त्रा और इकुनियुम का ही उल्लेख है। (यदि तीमुथियुस दिरबे से था, तो हमें उसके लुस्त्रा और इकुनियुम में सुनाम होने का परिचय मिलता है, परन्तु उसके अपने गृहनगर में नहीं)। [12]पौलुस ने विशेष तौर पर यह कभी नहीं कहा कि यूनीके की तरह लोइस भी मसीही बन गई थी, परन्तु 2 तीमुथियुस 1:5 से ऐसा ही लगता है। [13]टीन एज तेरह से उन्नीस वर्ष आयु के युवकों के लिए कहा जाता है। मैक्गर्वे ने अनुमान लगाया कि पौलुस की मिशनरी यात्रा के समय तीमुथियुस की आयु पन्द्रह वर्ष की थी। क्योंकि, लगभग बीस वर्ष बाद भी तीमुथियुस को ''जवान'' (1 तीमुथियुस 4:12) ही कहा गया, उस समय वह निश्चय ही *बहुत* छोटा होगा जब पौलुस उसे मिला। [14]इस भाग में 14:20 पर नोट्स देखिए। [15]कई बार माता-पिता इस बात से शर्मिंदा होते हैं कि उनके पास उनकी तुलना में जिनके बच्चे नहीं हैं, समय नहीं होता; उनको यह पता होना चाहिए कि बच्चों का पालन-पोषण करते हुए, वे प्रभु की सेवा ही कर रहे होते *हैं*। यहां पर आप *दादा-दादी/नाना-नानी* पर ज़ोर दे सकते हैं कि प्रभु के मार्ग में वे अपने बच्चों के बच्चों को जैसे भी प्रभावित कर सकें अपने दायित्व को समझते हुए उसे पूरा करें। [16]इस भाग में 14:6 पर नोट्स देखिए। [17]उस समय शादियां परिवार वालों की इच्छा से होती थीं, मैं मान लेता हूं कि यह शादी यूनीके का नहीं, बल्कि उसके पिता का निर्णय था। पौलुस ने तीमुथियुस पर उसके नाना के अच्छे प्रभाव की बात नहीं की, इसलिए मेरा अनुमान है कि उसने अपनी बेटी की शादी किसी गैर यहूदी के साथ वित्तीय कारणों से की। [18]पौलुस ने लोइस और यूनीके को वचन से बहुत प्रेम करने वाली महिलाएं दिखाया है, इसलिए

तीमुथियुस का खतना न होने की अच्छी व्याख्या होगी कि उसके पिता ने ऐसा करने से मना किया था। उन दिनों, आम तौर पर पत्नियों की अपनी कोई पसन्द नहीं होती थी बल्कि वे अपने पतियों के आदेशों को पूरा करती थीं। [19]मैं एक मसीही की किसी गैर-मसीही के साथ शादी का समर्थन नहीं कर सकता, परन्तु आम तौर पर लोग मसीही बन जाते हैं जबकि उनके जीवन साथी मसीही नहीं बनते और धार्मिक तौर पर उनके घर विभाजित रहते हैं। [20]यदि मैक्गर्वे का अनुमान सही है, तो जब पौलुस वापस आया तो तीमुथियुस की आयु लगभग 18 वर्ष होगी।

[21] पृष्ठ 151 पर मानचित्र के साथ पृष्ठ 88 पर 14:6 पर नोट्स देखिए। [22]मैं सत्रह वर्ष की आयु में प्रचार करने लगा था और अठारह वर्ष का होने पर मुझे एक मण्डली के लिए हर रविवार को प्रचार करने के लिए कहा जाता था। हमारे इलाके में यह बात असामान्य नहीं थी और शायद वहां भी नहीं, जहां तीमुथियुस रहता था। [23]इसमें कोई तर्कसंगत संदेह नहीं हो सकता कि प्राचीनों की ओर से किया गया यह समारोह उसे [तीमुथियुस को] प्रचार के काम के लिए अलग करना था; क्योंकि इसका और कोई उद्देश्य दिखाई नहीं देता। [24]बहुत से टीकाकारों का मानना है कि 1 कुरिन्थियों 16:10 और 2 तीमुथियुस 1:6, 7 जैसे पद यही सुझाव देते हैं। हां, प्रभु प्रचार और शिक्षा देने के काम में भी कायर लोगों का उपयोग कर सकता है। फिलिप्पियों 4:13 को न भूलें। [25]जो लोग मुझ से बेहतर यूनानी भाषा जानते हैं उनका कहना है कि 16:1 और 3 में प्रयुक्त वाक्य यही संकेत देते हैं। जितना हम इन तथ्यों को जानते हैं उनसे यह संकेत मिलता है कि तीमुथियुस को पौलुस के साथ जाने की अनुमति मिल गई थी और किसी ने तीमुथियुस का खतना करने से मना नहीं किया। यूनीके इस बात पर अवश्य ही अपने परिवार के हिसाब से निर्णय ले रही होगी। [26]दूसरा कारण उन्हें समर्थन देने वाली मण्डलियों का न मिलना है। [27]यहां "यूनानी" का अर्थ संभवत: "यूनानी भाषा बोलने वाला गैर-यहूदी" है। [28]उनका व्यावहारिक दर्शन यह था कि "यह तो सुनिश्चित नहीं हो सकता कि बच्चे का पिता कौन है, परन्तु बच्चे की माता का पता होता है कि इसलिए, यदि माता यहूदी है, तो बच्चा भी यहूदी है।" [29]खतने के प्रति पौलुस की अपनी कोई दिलचस्पी नहीं थी (गलतियों 5:6; 6:15); यह गलत तभी था यदि यह लोगों पर उद्धार की शर्त के रूप में थोपा जाता। ध्यान रखें कि खतने की प्रथा नई व्यवस्था के दिए जाने से पहले से ही थी (यूहन्ना 7:22); मूसा द्वारा व्यवस्था दिए जाने से बहुत पहले इस्राएलियों का खतना होता था। [30]इसमें संदेह है कि किसी ने तीमुथियुस को खतना करवाने के लिए ज़बरदस्ती की होगी। फिर, उसे उद्धार पाने के लिए खतना नहीं करवाना था, बल्कि पौलुस का सहयात्री बनने के लिए करवाना *था* परन्तु कोई भी उसे पौलुस के साथ जाने के लिए मजबूर नहीं कर रहा था।

[31]जवान स्त्रियों को सिखाना भी महत्वपूर्ण है (तीतुस 2:3-5); क्योंकि बात जवान तीमुथियुस की हो रही है, इसलिए मैंने इस पाठ में जवान पुरुषों पर ही ध्यान केन्द्रित रखा। [32]हम इसे आम तौर पर "पौलुस-तीमुथियुस का प्रबन्ध" कहते हैं। यह सिखाने के दूसरे ढंगों पर संदेह प्रकट करने के लिए नहीं है, क्योंकि हर एक के अपने लाभ और हानियां हैं। [33]"प्रेरितों के काम, भाग-2" के पृष्ठ 185 पर "पवित्र आत्मा क्या करता है?" पर अतिरिक्त लेख देखिए। [34]यह सम्भव है कि पौलुस ने तीमुथियुस पर तब तक हाथ नहीं रखे जब तक उसने अपने आप को साबित नहीं कर दिया। [35]यह पक्का नहीं है कि और मण्डलियां स्थापित हुईं या नहीं। देखिए 13:13,14; 14:24,25; "मिशन कार्य की कड़वी मिठास" और "उपदेश की बात" पाठ में नोट्स और पृष्ठ 107 पर नोट्स भी देखिए। [36]Decree के अर्थ, और अधिकार क्षेत्र के बारे में प्रेरितों 15 पर नोट्स देखिए। [37]पौलुस के वहां जाने का मुख्य उद्देश्य यही था। पौलुस और सीलास द्वारा दी गई शिक्षा और उपदेश से कलीसियाएं आम तौर पर "विश्वास में स्थिर होती गईं।" वे विशेष तौर पर "विश्वास में स्थिर" इसलिए भी हुईं क्योंकि यहूदी शिक्षा देने वाले झूठे शिक्षकों के रूप में प्रकट हो गए थे। [38]लूका द्वारा दी गई यह तीसरी "प्रगति रिपोर्ट" है। ध्यान दें कि जब कलीसियाएं "स्थिर" हुईं तो वे गिनती में भी हर रोज़ बढ़ती थीं। यदि हम हर रोज़ गिनती में नहीं बढ़ते तो शायद हमें कुछ गंभीर स्थिरता की आवश्यकता है। [39]यह आज का एशिया महाद्वीप नहीं, उस समय का रोमी इलाका था। [40]आगे की घटनाओं से स्पष्ट है कि उसने यहीं पहुंचना था (18:19-21; 19:1)।

[41]प्रेरितों 20:23; 21:4, 10, 11 पर ध्यान दें। बेशक, यह सम्भव है कि, पवित्र आत्मा ने उन तक

अपनी इच्छा पहुंचाने के लिए कुछ अन्य साधनों का इस्तेमाल किया। [42]बाद में पौलुस ने एशिया में काम किया (प्रेरितों 19), सो यह उत्तर ''न'' की जगह ''अभी नहीं'' था। परमेश्वर ने कुछ देर के लिए द्वार बन्द किया था; उसने उसे बाद में खोलना था (1 कुरिन्थियों 16:8, 9)। [43]इस इलाके में सुसमाचार का प्रचार बाद में हुआ, शायद पतरस के द्वारा (ध्यान दें 1 पतरस 1:1)। [44]वाक्यांश ''यीशु का आत्मा'' धर्म शास्त्र में कहीं और नहीं मिलता। [45]जब मैं किसी नये क्षेत्र में जाता हूं, तो सबसे पहले मेरा यह प्रश्न होता है ''क्या यहां कोई मसीही डॉक्टर है?'' [46]जो सुझाव दिए गए हैं उनमें ये शामिल हैं: लूका फिलिप्पी के अपने गृहनगर में जाने के लिए जहाज़ की प्रतीक्षा कर रहा था; वह जहाज़ में डॉक्टर की नौकरी की तलाश में था; लूका फिलिप्पी से आए लोगों का नेतृत्व कर रहा था जो पौलुस और अन्यों को मनाने के लिए कि वे उनके नगर में आएं त्रोआस में गए थे। आयत 10 (और उससे अगली आयतें अंतिम सुझाव को बिल्कुल ही अनुपयुक्त बना देती हैं)। [47]''ड्रीम टीम'' शब्द का प्रयोग हाल ही के ओलंपिक खेलों में अमेरिका का प्रतिनिधित्व करने वाले बास्केटबॉल खिलाड़ियों की टीम के लिए किया गया।

क्या प्रेरितों 15:20, 29 की पाबंदियां हम पर लागू होती हैं?

विद्वान सहमत नहीं हैं कि प्रेरितों 15:20 और 29 की पाबंदियां आरम्भिक कलीसिया पर किस हद तक लागू होती थीं। कई लोग (मैं उन्हें ''पक्ष 1'' का नाम देता हूं) कहते हैं कि पाबंदियां केवल विशेष परिस्थितियों के लिए थीं। दूसरे (''पक्ष 2'') ज़ोर देते हैं कि पाबंदियां विश्वव्यापी थीं और उन्हें आज भी माना जाना चाहिए।

पक्ष 2 प्रेरितों 15 में ''आवश्यक शब्द बातों'' की ओर ध्यान दिलाता है, परन्तु पक्ष 1 कहता है कि इसका अर्थ ''उद्धार के लिए आवश्यक बातों'' के बजाय ''यहूदी और गैर-यहूदी मसीहियों की संगति बताने के लिए आवश्यक'' हो सकता है। पक्ष 2 कहता है, कि ''यह तथ्य कि पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस पत्र को मिलाया, यह दिखाता है कि उसका इरादा था कि हम सब इसके निर्देशों का पालन करें, '' परन्तु पक्ष 1 ज़ोर देता है कि यह इतना आवश्यक नहीं है। इसके स्थान पर, पक्ष 1 का सुझाव है कि प्रेरितों 15 का विवरण (1) आरम्भिक कलीसिया के इतिहास के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में और (2) *साधारण* तौर पर समस्याओं को सुलझाने के लिए हमारी शिक्षा के लिए दर्ज किया गया है।

पक्ष 1 ध्यान दिलाता है कि पत्र में सीमित श्रोताओं को संबोधित किया गया है (15:23), परन्तु पक्ष 2 ज़ोर देता है कि यह पत्र इससे भी दूर ले जाया गया था (16:4, 6)। इसके अलावा, पक्ष 2 ध्यान देता है कि पौलुस के सभी पत्र सीमित श्रोताओं के नाम हैं (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2; आदि), परन्तु उन पत्रों में दिए गए निर्देश आज भी हम पर लागू होते हैं। पक्ष 1 पूछता है, कि ''यदि प्रेरितों 15 का पत्र विश्वव्यापी बनाने के इरादे से लिखा गया था तो पतरस ने उस पत्र का उल्लेख तब क्यों नहीं किया जब उसने यरूशलेम की सभा में विचार किए गए इसी विषय अर्थात गैर-यहूदी मसीहियों के लिए खतना करने के बारे में गलतियों को क्यों नहीं लिखा? कुरिन्थुस के मसीहियों को लिखते समय उसने

मूर्तियों के चढ़ावे को खाने की बात किसी की इच्छा पर क्यों छोड़ी, उन्हें साफ मना क्यों नहीं किया जैसे प्रेरितों 15 के पत्र में किया गया था?'' पक्ष 2 उत्तर देता है, ''गलतियों को पौलुस के पत्र में ज़ोर दिया गया था कि मूल प्रेरितों ने उसको सिखाने में कोई योगदान नहीं दिया (गलतियों 2:6)। मूल प्रेरितों की व्यवस्था का उल्लेख करना प्रतिप्रभावी होता। कुरिन्थियों के नाम पौलुस की पत्री का आरम्भ यह कहते हुए हुआ कि मसीहियों को मूर्तियों के बलिदान खाने का अधिकार था, परन्तु इसका अन्त दूसरों को ठोकर लगने से बचाने के लिए कहते हुए हुआ कि मसीहियों को वे वस्तुएं नहीं खानी चाहिए जिनका उन्हें पता हो कि उन्हें मूर्तों के सामने बलिदान किया गया है (1 कुरिन्थियों 10:23-33)। अन्य शब्दों में पौलुस उसी बुनियादी निष्कर्ष पर पहुंचा जो प्रेरितों 15 के पत्र में दिया गया था: दूसरों की खातिर, मूर्तों के सामने बलि की हुई वस्तुएं मत खाओ।''

बहुत से लोग इस बात से सहमत हैं कि नया नियम साधारण तौर पर व्यभिचार और मूर्तों पर बलि की हुई वस्तुओं को खाने की निन्दा करता है (1 थिस्सलुनीकियों 4:3, 5; 1 कुरिन्थियों 10:19-21; देखिए प्रकाशितवाक्य 2:14, 20)। इसलिए, ज्यादा असहमति, लहू के खाने/पीने की मनाही पर ही केन्द्रित है, जिसका नये नियम में कहीं और उल्लेख नहीं है। जैसे ''विवाद निपटाने के लिए कुछ सुझाव'' पाठ में कहा गया था, इस प्रथा की मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले (उत्पत्ति 9:4) और व्यवस्था में भी निन्दा की गई थी (लैव्यव्यवस्था 17:8-16)। इस मनाही के कारणों में बीमारी को फैलने से रोकने के लिए कुछ स्पष्ट थियोलोजिकल कारण और अस्पष्ट व्यावहारिक कारण हैं।

लहू खाने/पीने की व्यवस्था दिए जाने से पहले ही निन्दा की गई थी, इसलिए यह एक सामान्य सिद्धांत लगता है कि परमेश्वर की हमेशा यही इच्छा है। इसलिए, मैं, न तो लहू खाता हूं और न ही पीता हूं। परन्तु, मैं इस बात पर हठधर्मी नहीं हो सकता। ''हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले'' (रोमियों 14:5ख)।

(यद्यपि लहू खाने/पीने की मनाही आज लागू है, परन्तु किसी को खून देने पर पाबंदी नहीं ।)